Akshardhara Research Journal
Single Blind Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal
E ISSN -3048-8095 / Bimonthly / SJIF Impact- 3.4/ November- December 2025 / VOL-02 ISSUE-III

30

कृष्णा सोबती और मधु कांकरिया के उपन्यासों में नारी-मनोविज्ञान की अभिव्यक्ति : एक तुलनात्मक अध्ययन

प्रतिभा विनायक बोरसे
शोधछात्रा
प्रो डॉ महेन्द्रकुमार रा.वाढे
शोध मार्गदर्शक
श्री.शिविप्रसंस्था का भाऊसाहेब ना.स.पाटिल साहित्यएवं मु.फि.मु.अ.वाणिज्य महाविद्यालय, देवपुर,धुले

हिंदी महिला साहित्यकारों में प्रमुख स्थान रखने वाली कृष्णा सोबती और मधु कांकरिया दो ऐसी सशक्त महिला लेखिकाएं है, जिनके लेखन में वर्तमान समस्याओं का भाव बोध, परिवेशगत अनुभूति संवेदना और नष्ट होती जा रही मानवीयता आदि को लेकर साहित्य सृजन कर रही है। कृष्णा सोबती और मधु कांकरिया के उपन्यासों में नारी अनुभवों, नारी चेतना और मनोवैज्ञानिक वास्तविकताओं को नई दृष्टि और नई भाषा प्रदान की। वह नारी मन की संवेदनाओं और उनके मनोविज्ञान की प्रवक्ता के रूप में माना जाता है। एक नारी होने के नाते नारी जीवन के विभिन्न पहलुओंकी मनोवैज्ञानिक अभिव्यक्ति उनके साहित्य में व्यक्त हुई दिखाई देती है। इसी दृष्टिकोण को ओर अधिक समझने के लिए "हिंदी उपन्यासों में नारी मनोविज्ञान की अभिव्यक्ति : कृष्णा सोबती और मधु कांकरिया के संदर्भ में" इस विषय पर प्रस्तुत शोधलेख में प्रकाश डाला गया है।

बीज शब्द.... मनोविज्ञान, अवचेतन मन, दमन, उपन्यास, ,आत्म-अभिव्यक्ति, काम-चेतना, मानसिक शक्ति,नारी-परिकल्पना,मित्रो मरजानी, ऐ लड़की, सेज पर संस्कृत, सलाम आखरी,हम यहाँ थे.....

मनोविज्ञान.....मनोविज्ञान मन और व्यवहार का वैज्ञानिक अध्ययन है। यह एक ऐसा शास्त्र हैं,जो मनुष्यों और अन्य प्राणियों की मानसिक, प्रक्रियाओं,भावनाओं, विचारों और व्यवहारों को क्रमबद्ध और वैज्ञानिक तरीके से समझने का प्रयास करता है। मनोविज्ञान में सिग्मंड फ्राइड का मनोविश्लेषण सिद्धांत में अवचेतन मन, दमन, तथा बाल्यकालीन अनुभवों के प्रभाव जैसी अवधारणाएं महिला पात्रो के आंतरिक संघर्षों, दबी भावनाओं तथा सामाजिक अपेक्षाओं से निर्मित तनाव को समझने में सहायक होती है। यद्यपि फ्राइड की दृष्टि को अनेक नारीवादी विचारकों ने पुरुषों केंद्रित मन है। फिर कृष्णा सोबती और कांकरिया के साहित्यिक संसार में महिलाएं स्वयं की पहचान, स्वायत्तता और मनोवैज्ञानिकता को दृढ़ता का सिद्धांत एक ओर इन पात्रों के मनोविश्लेषण का साधन बनता है,वहीं दूसरी ओर उसके पुरुष केंद्रित दृष्टिकोण की आलोचना के माध्यम से आधुनिक हिंदी साहित्य में नारी चेतना की विशिष्टता को भी उजागर किया है।

हिन्दी साहित्य में नारी की मानसिक संवेदना, उसके अस्तित्व, संघर्ष, यथार्थ और आत्म-स्वीकृति को चित्रित करने में कृष्णा सोबती और मधु कांकरिया दोनों महत्वपूर्ण नाम हैं। दोनों लेखिकाएँ स्त्री-अनुभव को अपने-अपने ढंग से गहराई, संवेदना और सामाजिक संदर्भों के साथ प्रस्तुत करती हैं। सोबती की भाषा का ठोसपन, नारी की स्वायत्तता का आग्रह और मनोवैज्ञानिक जटिलताओं का खुलापन वहीं कांकरिया के यहाँ सामाजिक-नैतिक द्वन्द्व, आधुनिक स्त्री की टूटन-बिखरन और अर्थहीनता से जूझती मानसिक दुनिया अधिक प्रमुख है

1. स्त्री-स्वायत्तता और आत्म-अभिव्यक्ति.....कृष्णा सोबती के उपन्यासों में नारी अपने अस्तित्व की मालिक है। उनके उपन्यास मित्रो मरजानी में मित्रो अपने अस्तित्व और इच्छाओं के प्रति सजग है। लेखिका कहती हैं कि "मैं अपनी देह की मालिक हूँ, किसी के रहमो-करम पर नहीं।"1 यह नारी -मनोविज्ञान में देह-चेतना और आत्मसम्मान की परिपक्व आवाज़ है।मित्रो मरजानी की मित्रो अपनी कामनाओं, इच्छाओं और शरीर के प्रति बिन झिझक स्वीकृति रखती है। उनका नारी-मनोविज्ञान विद्रोही, स्वतंत्र, और आत्मनिर्भर है। नारी किसी के अधीन नहीं बल्कि अपने व्यक्तित्व की पूर्ण स्वामी है। **मधु कांकरिया** की नारी भी स्वायत्त है, पर उसका मनोविज्ञान अधिक जटिल और अंतर्द्वंद्वपूर्ण है। लेखिका कहती हैं कि "मैं औरों की आँखों से नहीं, अपनी आँखों से खुद को देखना चाहती हूँ।"2 यह स्त्री की आत्मचेतना और पहचान-बोध का मनोवैज्ञानिक स्वर है। मधु की रचनाओं में नारी के भीतर दमन और आत्म-संघर्ष की गहरी परतें हैं। नारी अपनी राह बनाती है,लेकिन समाज, परिवार और भावनात्मक संबंध उसे भीतर से छीलते रहते हैं।

तुलना: सोबती की नारी खुलकर विद्रोह करती है, जबकि कांकरिया की नारी भीतर ही भीतर टूटते हुए भी आगे बढ़ने का साहस खोजती है।

2. काम-चेतना और देहबोध.....कृष्णा सोबती नारी की काम-चेतना को नैसर्गिक और प्रामाणिक रूप में प्रस्तुत करती हैं। सोबती और कांकरिया दोनों स्त्री की देह को अपराध नहीं, बल्कि उसके मनोविज्ञान का स्वाभाविक हिस्सा मानती हैं। **मित्रो मरजानी** उपन्यास में लेखिका कहती हैं कि "औरत की इच्छा कोई चोरी नहीं; उसे दबाने से ही दुःख जन्म लेते हैं।"3 यह स्त्री-कामना की स्वाभाविकता और उसके मनोवैज्ञानिक महत्व को दर्शाता है। सामाजिक निषेधों को तोड़ते हुए नारी-इच्छाओं को सकारात्मक भाव में रखती हैं। **मधु कांकरिया** काम-चेतना को आत्मिक पीड़ा, उपेक्षा और असुरक्षा के संदर्भ में चित्रित करती हैं। लेखिका कहती हैं कि "देह से ही जीवन की आवाजें उठती हैं, उसे दबाओ तो मन भी कुंठित हो जाता है।"4 यह स्त्री-देह और स्त्री-मन के परस्पर संबंध को रेखांकित करता है। नारी -देह सामाजिक हिंसा, आर्थिक मजबूरी और भावनात्मक रिक्तता से भी जुड़ती है।

Akshardhara Research Journal
Single Blind Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal
E ISSN -3048-8095 / Bimonthly / SJIF Impact- 3.4/ November- December 2025 / VOL-02 ISSUE-III

तुलना: सोबती के यहाँ देह–स्वीकृति उत्सवधर्मी है, जबकि कांकरिया के यहाँ देह-अनुभव दर्द, संघर्ष और सामाजिक समानता की लड़ाई से जुड़ा है।

3. सामाजिक-सांस्कृतिक दबाव और मनोवैज्ञानिक संघर्ष .....कृष्णा सोबती शहरी और ग्रामीण नारीयों के जीवन में बसने वाले संस्कार, जाति, परिवार और परंपरा की सीमाओं पर तीखी चोट करती हैं। नारी को बंधनों से निकलने की ताकत देती हैं। लेखिका ऐ लड़की उपन्यास में कहती हैं कि "घर की दीवारें सुरक्षा से ज्यादा मेरी आवाज़ को रोकने वाली दीवारें लगती हैं।"5 यह परिवार के भीतर स्त्री के मनोवैज्ञानिक दमन और मौन संघर्ष का रूपक है। **मधु कांकरिया** नारी को आधुनिक शहर, मध्यवर्गीय दम्भ, आर्थिक दबाव, उपभोक्तावाद और टूटते रिश्तों में फ़ँसी हुई दिखाती हैं। मनोवैज्ञानिक थकान, अवसाद, आत्मविश्वास की कमी, और अस्तित्व–संकट उनकी नारी के अनुभव में प्रमुख हैं।

तुलना: सोबती परंपरागत संरचनाओं पर सवाल करती हैं, जबकि कांकरिया आधुनिक जीवन की जटिलताओं को मनोवैज्ञानिक स्तर पर खोलती हैं।

4. भाषा, शैली और मनोवैज्ञानिक प्रस्तुति.....कृष्णा सोबती के भाषा में स्थानीय रंग, बोलचाल, सहजता और जीवन्तता, नारी के मन की परतें संवाद, लहजे, और संस्कृति-सूत्रों से खुलती हैं। **मधु कांकरिया** के उपन्यासों में भाषा अधिक अंतर्मुखी, चिंतनशील और मनोवैज्ञानिक वर्णन में आत्मस्वीकृति, आत्मदंश और मनोवैज्ञानिक विश्लेषण के आयाम अधिक हैं।

तुलना: कृष्णा सोबती की भाषा नारी को जीवंत बनाती है; तो मधु कांकरिया की भाषा नारी को चिंतनशील।

5. मानसिक शक्ति और नारी-परिकल्पना.....कृष्णा सोबती नारी को शक्ति, संघर्ष और हिम्मत के रूप में प्रस्तुत करती हैं ,वह कई बार पुरुष-प्रधान संरचना को चुनौती देती हुई दिखती है। कृष्णा सोबती उपन्यास में कहती हैं कि "मैं चुप हूँ, पर मेरी चुप्पी मेरी हार नहीं—मेरा संकल्प है।"6यह स्त्री के आंतरिक प्रतिरोध और मानसिक दृढ़ता को इंगित करता है। **मधु कांकरिया** का नारी मनोविज्ञान जटिल, परतदार और गहराई से सामाजिक-राजनीतिक है। वह संघर्ष करती है, पर अपने भीतर की टूटन और संवेदनाओं को भी व्यक्त करती है। मधु कांकरिया कहती हैं कि "मैं टूटकर भी हर बार नयी बनती हूँ—यही मेरा कायान्तर है।"7यह स्त्री के मनोवैज्ञानिक पुनर्जन्म और साहस का प्रतीक है।

तुलना: सोबती की नारी मजबूत, इसके विपरीत कांकरिया की नारी संवेदनशील-मजबूर होकर भी मजबूत है।

निष्कर्ष....कृष्णा सोबती और मधु कांकरिया दोनों के उपन्यासों में नारी -मनोविज्ञान अत्यंत महत्वपूर्ण तत्व है, लेकिन उनकी दृष्टि और प्रस्तुति में गहरा अंतर है। सोबती की स्त्री खुलकर जीवित है, विद्रोही है, अपनी इच्छाओं और सपनों को जीने वाली है। कांकरिया की स्त्री आधुनिक सभ्यता के दबावों के बीच अपने अस्तित्व की लड़ाई लड़ती है—उसके मन में दर्द, संघर्ष और अस्मिता का द्वंद्व अधिक है। इस प्रकार दोनों लेखिकाएँ हिन्दी साहित्य को नारी-मनोविज्ञान के दो अलग किंतु पूरक आयाम देती हैं। कृष्णा सोबती और मधु कांकरिया दोनों लेखिकाएँ नारी को केवल पीड़ित नहीं दिखातीं; वह अपने भीतर से उठकर दुनिया का सामना करती है।

कृष्णा सोबती और मधु कांकरिया, दोनों आधुनिक हिन्दी साहित्य की वे लेखिकाएँ हैं जिन्होंने स्त्री के मन को बाहरी सामाजिक संघर्षों से लेकर उसकी आंतरिक संवेदनाओं तक व्यापक रूप में उभारा।उनका साहित्य यह सिद्ध करता है कि—स्त्री की मनोवैज्ञानिकता सिर्फ दुखों की कथा नहीं, उसकी शक्ति, अस्तित्व, देह-बोध, पहचान और प्रतिरोध की भी कथा है।

सन्दर्भ

1. कृष्णा सोबती-मित्रो मरजानी, पृ.सं. 34, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली,1966
2. मधु कांकरिया- सलाम आखरी , पृ.सं.88, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली,2002
3. कृष्णा सोबती-मित्रो मरजानी, पृ.सं. 17, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली,1966
4. मधु कांकरिया- सेज पर संस्कृत-, पृ.सं. 11, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली,2008
5. कृष्णा सोबती- ऐ लड़की, पृ.सं. 92, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली,1991
6. कृष्णा सोबती- ऐ लड़की, पृ.सं. 92, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली,1991
7. मधु कांकरिया- हम यहाँ थे, पृ.सं.48, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली,2018
8. डॉ.अनीता - कृष्णा सोबती के कथा साहित्य में स्त्री का स्वरूप,जवाहर पुस्तकालय संस्करण 2006
9. डॉ.मेरिना पॉलिन सी.जे.-मधु कांकरिया के उपन्यासों में नारी,विद्या प्रकाशन,2021